Loktantra me satta, sangharsh ka akhada

'' लोकतंत्र में सत्ता, संघर्ष का अखाड़ा ''

Amrit Lal Chandrabhas

अमृत लाल चन्द्रभाष
सहा.प्राध्यापक (राज.विज्ञान)
शास.लाल चक्रधर शाह महावि. अम्बागढ़ चौकी
जिला – राजनांदगांव (छ.ग.)

पृष्ठभूमि :– आज के आधुनिक समय में राजनीतिक अध्ययन में मुल्यों की स्थिति को राजनीति के शक्ति सिद्धांत की बली वेदी पर चढ़ा दिया जाता है। अतीत में राजनीतिक सिद्धांत की लोकप्रियता कारण इसका राजनीतिक आधार पर नैतिकता या आचार शास्त्र से संबन्धित था। जैसे युनानी विचारक किन्तु आज राजनीतिक चिंतक व्यवहारिक नैतिक राजनीति से मुँह मोड़कर एक सैद्धांतिक प्राणी बन गया है। आज के राजनीतिक चिंतकों ने अपने बौद्धिक निष्पक्षता की दुहाई देकर अपने आप को सामाजिक और राजनीतिक जीवन से काट कर अलग कर लिया है। '' चाहिये '' शब्द की उपेक्षा ही आज राजनीतिक सिद्धांत के पतन का करण है। '' चाहिये '' शब्द के कारण ही आज राजनीतिक सिद्धांत नैतिकता विहिन है। यही राजनीतिक पतन का कारण है। कब्बन का विचार है कि आधुनिक राजनीतिक चिंतन इतिहासवाद के प्रभाव और विज्ञान के प्रभाव कारण नैतिक दृष्टि से अपंग हो हो चुका है। आज राजनीतिक घटनाओं का निर्धारण सत्ता के संदर्भ में करने से ही है। इसे प्रकृति ने राजनीतिक सिद्धांत में कोरे मैकियावलीवाद को जन्म दिया है। इसमें नैतिकता की कोई गुजाईश हीं नहीं। प्राचीन समय में राजनीतिक चिंतक किसी न किसी व्यवहारिक एवं सामाजिक तथा राजनीतिक उद्देश्य को ले कर ही अपना कार्य करते थे, जिससे राजनीतिक संस्थाओं का व्यवहार प्रभावित होता था। परंतु आज राजनीतिक चिंतक स्वप्नमयी दुनिया का प्राणी बनकर रह गया है। कब्बन का मत है, कि जो राजनीतिक चिंतक, सामाजिक परिवर्तन में अपना योगदान देना चाहिये वह उससे विमुख हो रहा है। वही राजनीतिक सिद्धांत के मृत्यु का कारण बनता है। विकास का नहीं, आज की सत्तावादी राजनीति में नैतिक मूल्यों का कोई स्थान नहीं रहा है।

शोध प्रविधि :– इस शोध पत्र के लिये शोध सामग्री अधिकांश रूप से द्वितीयक स्रोतों से ग्रहण की गयी है। इसमें ऐतिहासिक विश्लेषण व वर्णात्मक दृष्टिकोण के साथ–साथ शोधकर्ता ने अपने व्यक्तिगत अनुभवों को भी स्थान दिया है। शोध सामग्री प्रसिद्ध पुस्तकों, पत्र–पत्रिकाओं व समाचार पत्रों से प्राप्त की गई है।

उद्देश्य :– 1. लोकतंत्र मे सत्ता के संघर्ष का उत्तरदायी कारकों का विश्लेषण करना।

2. लोकतंत्र शासन प्रणाली ही नहीं, जीवन पद्धति है।
3. लोकतंत्र में राजनीतिक दलों की भूमिका के प्रति जागरूकता निर्मित करना।
4. लोकतंत्र में विकास के लिये अवसर उपलब्ध करना ।
5. लोकतंत्र में सुधारवादी प्रवृत्ति के लिये राजनीतिक चिंतको के विचार को प्रतिस्थापित करना।
6. लोकतंत्र के अपवाहों के प्रति लोगों को सतर्क करना।
7. लोकतंत्र के विचारकों के विचार को आगे बढ़ाना।
8. लोकतंत्र को सत्ता संघर्ष तक ही सीमित न रखना।
9. लोकतंत्र में समाज सुधार की सच्चे सुधार की अर्थ की व्याख्या करना।
10. महात्मां गांधी के विचार को उजागर करना।

लोकतंत्र की अवधारणा :– प्रजातंत्र '' जनता द्वारा जनता के लिये जनता का शासन है।'' प्रजातांत्रिक व्यवसथा में सरकार सभी लोगों के लिये काम करती है। **जार्ज बर्नाडशाँ** के अनुसार ''प्रजातंत्र एक सामाजिक व्यवस्था है। जिसका लक्ष्य जनता का यथा सम्भव अधिकतम कल्याण करना है न किसी एक वर्ग का ।'' **लिसेण्ट के अनुसार** ''लोकतंत्र एक ऐसी राजनीतिक प्रणाली

है, जो पदाधिकारियों को बदल देने के लिये नियमित सांविधानिक अवसर प्रदान करती और एक ऐसे रचनातंत्र का प्रावधान करती है, जिसके तहत जनसंख्या का एक विशाल हिस्सा राजनीतिक प्रभार प्राप्त करने के इच्छुक प्रतियोगियों में से मनोनुकूल चयन कर महत्वपूर्ण निर्णयों को प्रभावित करती है। '' लोकतंत्र की अवधारण हमारी मानसिकता और सामाजिक मूल्यों में निहित है। इन दोनों की अनुपस्थिति में लोकतंत्र केवल एक संवैधानिक प्रस्तुति और औपचारिक बन कर रह जाता है। लोकतंत्र एक पूरी जीवन पद्धति है। जीवन जीने का तरीका है, लोकतंत्र का सक्रिय रूवरूप ही उत्तम समाज की निकटतम अभिव्यक्ति की स्थापना करना, लोकतंत्र समाज को नई दिशा देना चाहता है। समाज में नवीन मूल्यों की स्थापना करना और समाज को स्वतंत्रता, समानता तथा न्याय के साथ आगे की ओर खीच कर समाज ले जाना चाहता है। समाज के निचले स्तर के लोगों का जीवन स्तर में सुधार हो सके। लोकतंत्र मे सम्पूर्ण जीवन प्रगतिशीलता का अमूल्य धरोहर है। यह एक ओपन सोसायटी है, जिसमें सबको विकास करने का मौका या अवसर प्राप्त होता है। मानव विकास के मार्ग में आने वाले अवरोध को दूर करने का प्रयास किया जाता है, लोकतंत्र में हमारी सारी राजनीतिक प्रक्रिया आज भी अनगिनत जातिय, वर्गीय, यौनीय विभाजक अवरोधों का शिकार है। सहमति आज भी केवल बहिष्कार की रह गयी है, हर प्रकार के विभाजन का घोर कलुष हमें सही रूप से लोकतांत्रिक नहीं होने देता। लोकतंत्र आज विकास का नारा है, सभी राजनीतिक विचारों के समर्थक इसके प्रति निष्ठा की घोंषणा करते है। लेकिन व्यवहार में अलग–अलग वर्गों, समूहों और पार्टियों के लिए लोकतंत्र के अर्थ एकदम भिन्न हो सकते है। मतलब यह कि लोकतंत्र की कोई एक सर्वसम्मत व्याख्या नहीं है।

लोकतंत्र के मुख्य सिद्धांत :– लोकतंत्र के मुख्य सिद्धांत – स्वतंत्रता, समानत, बंधुत्व एवं न्याय है।

स्वतंत्रता :– स्वतंत्रता के अभाव में मानव अपनी शक्तियों का विकास नहीं कर पाता है। भारतीय लोकतंत्र में नागरिकों को वि. भन्न स्वतंत्रताएं दी गयी है, जैसे – वाक स्वतंत्रता, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, भारत राज्य क्षेत्र के किसी भी स्थान में निवास करने की स्वतंत्रता, भारत राज्य क्षेत्र के किसी भाग में प्रवास करने की स्वतंत्रता, कोई वृत्ति, उपजीविका की स्वतंत्रता आदि, व्यक्ति इन स्वतंत्रताओं का उपभोग तभी सफलता पूर्वक कर सकता है जब वह दूसरों की स्वतंत्रता का सम्मान करे।

समानत :– प्रजातंत्र में समानता राजनीति शास्त्र की महत्वपूर्ण अवधारण है। समानता अर्थ राजनीतिक व्यवस्था में सभी नागरिकों को समान शक्ति का उपभोग समान रूप से करते हो, अर्थात शासन के कार्यों में समान रूप से भाग लेना।

बन्धुत्व :– स्वतंत्रता एवं समानता के बीच समन्वय लाने का कार्य भातृत्व या बन्धुत्व करता है। सामाजिक हितों की रक्षा के लिये यह आवश्यक है कि सभी व्यक्ति आपस में प्रेम करे। परस्पर प्रेम हो, सभी में सहयोग की भावना हो। जब व्यक्ति स्वार्थ में रत होकर आपस में संघर्ष करता है तो स्वतंत्रता एवं समानता के बीच गतिरोध होता है। इसलिये भातृत्व को स्वतंत्रता एवं समानता के बीच सामंजस्य स्थापित करने वाली कड़ी कही जा सकती है।

न्याय :– प्रजातंत्र व्यवस्था न्याय पर आधारित होनी चाहिये। लोकतंत्र में न्याय की दृष्टि अमीर व गरीब निर्बल व शक्तिशाली सब समान है। उसके साथ कानूनी रूप से किसी प्रकार का कानूनी भेदभाव नहीं किया जायेगा। राजनीतिक दार्शनिक तो यह मानते है कि लोकतांत्रिक प्रणाली ही न्याय की प्राप्ति का एक मात्र साधन है। लोकतांत्रिक ढंग से लिये गये निर्णय का आधार खुली हुई होना चाहिये। लोकतंत्र में निर्णय विचार विनिमय एवं आम सहमति लिया जाना चाहिये।

लोकतंत्र की गुण :–

1. लोकतांत्रिक व्यवस्था को जनता के कल्याण, विकास का प्रतीक माना जाता है।
2. लोकतंत्र में शासन जनता के प्रति उत्तरदायी होता है।
3. लोकतंत्र में विचारों की स्वतंत्रता होती है।
4. प्रजातंत्र में जन सम्प्रभुसत्ता होने के कारण जनमत का बहुत ज्यादा महत्व होता है।
5. लोकतंत्र में समानता एवं भाईचारे की भावना होती है।
6. लोकतंत्र में अच्छे आदर्शों का संकल्प होता है।
7. लोकतंत्र में नैतिक विकास एवं राष्ट्रीय चरित्र के निर्माण में नागरिकों का योंगदान होता है।
8. प्रजातंत्र में विचारों की परिपक्वता होती है।
9. प्रजातंत्र में नागरिकों को समालोचा करने का पूरा आजादी होता है।
10. लोकतंत्र में जनता को राजनीतिक प्रशिक्षण प्राप्त होता है।

दोष :–

1. लोकतंत्र में कभी–कभी अयोग्य लागों की शासन स्थापित हो जाता है।
2. लेाकतंत्र बुद्धिजीवी बर्ग की उदासीनता होती है।
3. लोकतंत्र धनिकों का गढ़ हो गया है। चुनाव में बहुत अधिक धन खर्चा करना पड़ता है।
4. लोकतंत्र स्वार्थी राजनीतिज्ञों का शरण स्थल बन गया है।

5. लोकतंत्र अपराधियों का गढ़ बन रहा है।
6. लोकतंत्र में जनता के भावना के साथ खिलवाड़ होता है।
7. लोकतंत्र शासन में नौकरशाही प्रवृत्ति बढ़ रही है।
8. लोकतंत्र में राजनेता अपने किये वादे निभाने में असमर्थ।
9. लेकतंत्र में जन उपेक्षा का शिकार।
10. लोकतंत्र में कमजोर सरकार की स्थापना।
11. लोकतंत्र में दलबदल की संभावना अधिक होती है।

लोकतंत्र मे सत्ता संघर्ष :– लोकतांत्रिक शासन प्रणाली में आज कल सत्ता के लिये संघर्ष आम बात हो गई है। राजनीतिक दल का मुख्य उद्देश्य सत्ता प्राप्त करना और उसका उपभोग करना रह गया है। वास्तव में लोकतंत्र में शासन का उद्देश्य समाज के लोगों के समस्या का निवारण होनी चाहिये यदि सरकार पूरी तरह से कुर्सी तक सिमट कर रह जाता है तो यह समाज या देश को विकास की ओर न ले जा कर बंद समाज की ओर ढ़केलता है। इससे समाज या देश आगे उत्थान की ओर न जा कर पीछे की ओर चला जाता है। आज राजनेता का प्रमुख कार्य सत्ता प्राप्त करना, कुर्सी में बैठना, सत्ता सुख का उपभोग करना, चाहे वह नैतिक मार्ग हो या अनैतिक कोई परवाह नहीं। सत्ता के लिये दलबदल करना आम बात हो गई है। एक राजनेता अपने दल को छोड़ कर दूसरा दल में जाता है, तो उसें गद्दार कहा जाता है, यदि किसी दूसरे दल का राजनेता उसके पार्टी में आता है तो उसे हृदय परिवर्तन का नाम देते है। ये कैसे राजनीति कि राजनेता का काम उसके समाज सेवा को आधार मानकर चलना चाहिये। कार्य सेवा आधारित राजनेता का मूल्यांकन होना चाहिये। आज मानव सेवा को आधार न मानकर उसके जात, धर्म, वर्ग को आधार मानकर कर टिकट वितरण करते है, यही कारण है कि राजनीति अब धन कमाने का साधन बन कर रह गया है। महात्मां गांधी की बात जरूर करते है पर चलते नहीं गांधी जी का कहना था कि हरेक के आँख के आँसू को पोछ सके वही सच्चे राजनेता कहलाने का हक बनता है। राजनेता को उसके जात, धर्म, वर्ग के आधार पर नहीं उसके समाज सेवा के नाम से पहचानना चाहिये। यदि समाज सेवा को आधार मानकर आगे बढ़ते है तो सत्ता के लिये हो रहे संघर्ष समाप्त हो जायेगा। इसीलिये महात्मां गांधी दल विहिन समाज एवं राज्य विहिन समाज की कल्पना किया था।

निष्कर्ष :– आज राजनीति विज्ञान में न तो मूल्य निरपेक्षता संभव है, और न ही वैज्ञानिकता, आज प्रौद्योगिकी विकास ने सामाजिक जीवन के यथार्थ साध्यों और साधनों पर पुर्नविचार के द्वार खोल दिये है। लोकतांत्रिक साधनों में राजनीति के उच्च आदर्श एवं चरित्र का विकास किया जाना चाहिये। इसके द्वारा समस्याओं विचारों एवं दृष्टिकोणों को अति सरल कर लोगों के समझ कर लेना चाहिये, ताकि आम व्यक्ति भी इसके उद्देश्यों को समझ सके। लोकतांत्रिक विचार धारा किसी भी राजनीतिक समाज के व्यवहार को समझने तथा राजनीतिक कार्यों के लिये लक्ष्य निर्धारित करने में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। सभी राजनीतिक दल अपना सिद्धांत एवं विचार धारा को लेकर नियंत्रण स्थापित करते है।, और दूसरे विचार धारा का आलोचना करते है। आलोचना होना चाहिये पर शुद्ध हृदय से, कार्य आधारित हो व्यक्ति विशेष आधारित नहीं हो। विचारधारा ही शक्ति को वैधता एवं सत्ता को कवच प्रदान करती है। लोकतंत्र में जनता को त्याग एवं बलिदान की शिक्षा दी जाती है। लोकतांत्रिक कल्याणकारी राज्य में आर्थिक विकास हो यह पहली प्राथमिकता होनी चाहिये। यह भी आर्थिक विकास सबका निश्छल नदी की जल धारा की तरह बिना निष्कपट वैधानिक तरीके से हो, अमेरिकन विद्वानों का कहना है कि आधुनिक युग लोकतंत्र का युग है। प्रजातंत्र जनता की सहमति से शासन होना चाहिये जिसमें संघर्ष एवं वर्ग संघर्ष की कोई स्थान न हो।

संदर्भ ग्रंथ :–

1. विकिपीडिया
2. लोकतांत्रिक भारत में लोकप्रशासन : प्रो. पी. डी. शर्मा
3. राजनीति विज्ञान : पुखराज जैन
4. राजनीतिक सिद्धांत : ओ. पी. गाबा
5. तुलनात्मक राजनीति विज्ञान : जे. सी. जौहरी
6. राजनीति विज्ञान : आशीर्वादम
7. राजनीति विज्ञान : जे. श्याम सुन्दरम, सी पी शर्मा
8. राजनीति विज्ञान विश्वकोश : ओ. पी. गाबा
9. राजनीति चिंतन की रूपरेखा : ओ. पी. गाबा
10. विवेचनात्मक सामाजिक विज्ञान कोश : ओ. पी गाबा